## प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय " डॉ.शंकर शेषा के घरौन्दा " नाटक का कथ्य और शिल्प है "। डॉ.शंकर शेषा का कॉलेज जीवन में लिखा ' मूर्तिकार' नाटक जब मैंने पढा तब इसलेखक के लेखन के प्रति मै आकर्षित हुआ। ' मूर्तिकार' के बाद मैंने उनका ' घरौन्दा' नाटक पढा। ' घरौन्दा' नाटक पढने के पश्चात मुझे पता चला कि महानगर में घर की समस्या किस तरह होती है, मध्यवर्गीय लोग किस तरह इस समस्या का सामना करते है और टूटते-बिखरते है। इस दृष्टि से ' घरौन्दा' मुझे बहुत ही सार्थक नाटक लगा। इसलिए एम.फिल.के लघु शोध-प्रबन्ध के लिए " घरौन्दा" नाटक को चुनकर मैंने उसका विशेषा अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघुशोध-प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय में डॉ.शेषा की जीवनी,व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला है। वैसे तो उनकी जीवनी तथा कृतित्व अबतक अंधेरे में ही था। क्योंकि वे खुद प्रसिध्दि विन्मुख वृत्ति के थे। प्रकाश में आने के पहले ही उनका दु:खद देहांत हो गया था। उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनके नाटकों में दिखायी देता है। उनके नाटक अनुभवों पर खडे है इसलिए उनके व्यक्तित्व की छाप उनके कृतित्व पर स्पष्ट दिखाई देती है।

दूसरे अध्याय का शीर्षांक है " हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन" इसमें नाट्यप्रस्तुति के प्राथमिक प्रयासों से लेकर आधुनिक काल में प्रचलित विविध नाटय पध्दतियों तक का उल्लेख आया है। हिन्दी नाटय साहित्य में आये युगानुरूप परिवर्तन की प्रस्तुति यहाँ हुई है। आधुनिक काल में नाटक को प्रतिष्ठा दिलाने के हेतु रंगमंच के साथ रेडियो तथा दूरदर्शन आदि प्रसार माध्यमों के लिए भी नाटक

लिखे जा रहे है। डॉ.शेष ने भी इस बात के महत्व को जानकर रेडियो तथा दूरदर्शन के लिए अनेकानेक एकांकी और नाटकों की रचना की है।

तीसरे अध्याय का शीर्षक है 'डॉ.शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय' उनके 'मूर्तिकार', 'रत्नगर्भा', 'नई सभ्यता के नये नमूने', 'बेटोंवाला बाप', 'तिल का ताड', 'बिन बाती के दीप', 'बाढ का पानी', 'बंधन अपने अपने', 'खजुराहो का शिल्पी', 'एक और द्रोणाचार्य', 'फन्दी', 'कालजयी', 'घरौन्दा', 'अरे! मायावी सरोवर', 'रक्तबीज', 'पोस्टर', 'राक्षस', 'कोमल गांधार', 'आधी रात के बाद', 'चेहरे' आदि नाटक मिलते है। इन सभी नाटकोंकी विषय वस्तु का इसमें विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय 'घरौन्दा' नाटक का कथ्य ' शीर्षक से अभिहित है। यह अध्याय इस लघु शोध-प्रबन्ध का महत्वपूर्ण अध्याय है। शंकर शेष जी ने 'घरौन्दा' नाटक में कई समस्याओं को चित्रित किया है। वे इस तरह है -- घर की समस्या - प्रेम-संघर्ष, नैतिकता का बोझ, मध्यवर्गीय जीवन की समस्या, स्त्री पुरुष संबंध, महानगरीय जीवन, धन की प्राप्ति की समस्या, मध्यवर्गीय घरहीनों की बलत्तर महत्वाकांक्षा, भारतीय स्त्री के संस्कारों का चित्रण, अर्थ तन्त्र में जकडा नियतिवादी दर्शन, अर्धअग्नि से झुलसा मध्यवर्गीय समाज, अभाव ही व्याधियों का सूत्रधार, अर्थ के कारण संस्कृति का अध:पतन - अपाहिज ऊर्जस्विता, तथा षडयन्त्र प्रवृत्ति आदि का विवेचन किया है।

पाँचवां अध्याय 'घरौन्दा' नाटक का शिल्प' शीर्षक से अभिहित है जो इस लघु शोध-प्रबन्ध का महत्व का हिस्सा है। इसमें 'घरौन्दा' नाटक की कथावस्तु, चरित्रचित्रण, कथोपकथन, देश-काल वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता, रंगमंचीयता, तथा शीर्षक का विवेचन किया है।

प्रबंध के अंत में उपसंहार, आधार ग्रंथ तथा संदर्भ ग्रन्थ-सूची दी गयी है।

इस कार्य को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों, लेखकों तथा ग्रंथालयों ने मदद की है। उन सबके प्रति आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य है।

यह कार्य गुरूवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण जी के मार्गदर्शन का ही फल है। उनके मार्गदर्शन के अभाव में इस कार्य के संपन्न होने की कल्पना नहीं की जा सकती थी। आपके ज्ञान एवं आपकी विद्वता का मै पूरा लाभ तो उठा नहीं पाया। क्योंकि आप के पास इतना ज्ञान सागर है कि जिसका अनुमान लगाने के लिए मै अक्षम हूँ। आपके ज्ञान सागर से केवल मैं अपने लघु शोध प्रबन्ध की गगरी ही भर सका हूँ। मैं आपका आभार शब्दों में नहीं प्रकट कर सकता।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे परम स्नेही मित्र सिव्हिल इंजिनिअर इस्माइल नायकवडी जी का महत्वपूर्ण योगदान है, जिन्होंने मुझे समय समय पर बल देकर प्रोत्साहित किया। आपकी वजह से मेरा कार्य सरल हो गया इसलिए मै आपका हृदय से आभारी हूँ। इसी के साथ हिन्दी विभाग अध्यक्ष डॉ.पी.एस. पाटील तथा इस विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ.वसंत मोरे जी ने इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरी काफी मदद की है। इसलिए आपके प्रति आभार प्रकट करना मै अपना फर्ज मानता हूँ।

जिस संस्था के कॉलेज में मै कार्यरत हूँ उस संस्था के अध्यक्ष वडगावकरसाहब, पदाधिकारी, कर्मचारी, मुख्याध्यापक पाटील जी तथा मेरे सहयोगी अध्यापकों ने मुझे इस कार्य को संपन्न बनाने में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपसे सहयोग किया है, मै उन सब का आभार प्रकट करता हूँ। अंत में उन लेखकों एवं समीक्षाकों का मै हृदय से शुक्रगुजार हूँ जिनकी पुस्तकों से मुझे इस कार्य को संपन्न बनाने में काफी मदद हुई है। अपने परिवारवालों का आभार प्रकट करना तो उचित नहीं हो सकता परंतु देवतातुल्य माता-पिता गुरू समान बडे भाई और लक्ष्मण की तरह छोटे भाई, इन सब के सहयोग के कारण ही आज जो कुछ हूँ वह बन सका हूँ।

अंत में लघु शोध-प्रबन्ध को अत्यंत कम समय में सुचारू रूप से टंकित करने का श्रेय श्री बालकृष्ण रा.सावंत का है। अत: उनका भी मै आभारी हूँ। जिनके प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मिले सहयोग से यह कार्य संपन्न हुआ है। अंत में उन सब का आभार प्रकट करता हूँ और विद्वानों के सामने इसे विनम्रता से परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर।

तिथि :

शोध-छात्र

(श्री शिवाजी विष्णु पोवार)